चित्रकार

नरेश अग्रवाल

चित्रकार

डॉ. नरेश अग्रवाल

सर्वाधिकार सुरक्षित – डॉ. नरेश अग्रवाल

इस 'ई–पुस्तक' का प्रकाशन डॉ. नरेश अग्रवाल द्वारा स्वयं किया गया है।
पुस्तक के रूप में इसका प्रकाशन– प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, द्वारा सन् 2009 में किया जा चुका है।

ISBN: 81-7714-335-2

ई–पुस्तक प्रकाशन वर्षः सन् 2014

प्रकाशन संस्थान
4715/21 दयानंद मार्ग, दरियागंज,
नई दिल्ली – 110002
फोनः 23253234, 65283371

डॉ. नरेश अग्रवाल-एक परिचय

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।'' – इंडिया टुडे

1 सितम्बर 1960 को जमशेदपुर में जन्म।

अब तक स्तरीय साहित्यिक कविताओं की 6 पुस्तकों का प्रकाशन तथा शिक्षा सम्बन्धित 6 पुस्तकों का प्रकाशन। साहित्य जगत में रचित पुस्तकों को अच्छी ख्याति प्राप्त। 'इंडिया टुडे' एवं 'आउटलुक' जैसी पत्रिकाओं में भी इनकी समीक्षाएँ एवं कविताएँ छपी हैं। देश की सर्वोच्च साहित्यिक पत्रिका 'आलोचना' में भी इनकी कविताओं को स्थान मिला। लगभग सारी स्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित।

'मरुधर' रंगीन द्विमासिक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन पिछले चार वर्षों से लगातार कर रहे हैं, जो आर्ट पेपर पर छपती है।

सन् 2014 में सूक्तियों पर 'सूक्ति–सागर' नाम से एक पुस्तक लिखी, जो भारतवर्ष में संभवतः यह पहला प्रयास होगा

जब किसी लेखक द्वारा स्तरीय 1000 सूक्तियाँ हिन्दी भाषा में लिखी गयी।

'हिंदी सेवी सम्मान', 'समाज रत्न' सम्मान, अक्षर–कुंभ सम्मान आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित।

पौधों की बोनसाई विद्या में पूर्ण रुप से पारंगत तथा हजारों र्दुलभ पौधे इनके संग्रह में शामिल। बोनसाई में अनेक पुरस्कार मिले।

शतरंज, ज्योतिष, हस्त रेखा एवं होम्योपैथी में कई साल तक विस्तृत अध्ययन।
लगभग 5000 पुस्तकें इनके निजी पुस्तकालय में संग्रहीत हैं।

फोटोग्राफी विद्या में पूर्ण रुप से दक्ष तथा अपने भ्रमण के दौरान हजारों तस्वीर का संग्रह इनके बेवसाईट पर उपलब्ध हैं। यात्रा के बेहद शौकीन तथा अनगिनत जगहों की यात्रा की।

सम्पर्क –
रेखी मेन्शन, 8 डायगनल रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर–831001
दूरभाष – 9334825981, 7488504892
ई. मेल – smcjsr77@gmail.com
बेवसाईट : www.nareshagarwala.com

आत्मकथन

जब तक शब्द अक्षर थे वे चुपचाप थे, परन्तु जब वे चित्र बने, चलने लगे। एक सधी हुई कलम से सारा काव्य चित्रमय हो जाता है। घटनाएँ काल्पनिक न होकर एक जीती-जागती प्रस्तुति बन जाती हैं। वे सारे प्रतीक और उपमाएँ अपने पंख फड़फड़ाने लगती हैं, और जब समाप्त होता है कथन तो लगता है कुछ रहस्यमय उतर आया है हृदय में, वह भी बिना अनुमति के। इसी तरह के अनुभवों से सरोकार हो पाठक का, यही सोचकर इन कविताओं की रचना की गयी है।

अन्त में बस इतना कहना चाहूँगा-
लोग उलझे रहेंगे।
शताब्दी के नये-नये कारनामों में
हर दिन नयी चीजें उपलब्ध होंगी
उनके हाथों में
फिर भी मेरी कविताओं,
तुम्हें कोई संघर्ष नहीं करना पड़ेगा,
रखा जाएगा हाथों में जब भी तुम्हें
अँगुलियाँ पन्ने पलटने लगेंगी।

-डॉ. नरेश अग्रवाल

पूर्व लिखित पुस्तकों पर सम्मतियाँ

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।''
– इंडिया टुडे

''सब कुछ को सलीके से छिपाकर वे अपने पाठक को सरल से सरल भाषा में दृश्य–दर–दृश्य, कुछ अनसुने, अनदेखे और अनजाने को सुनने, देखने और जानने के लिये उकसाते हैं। इसलिए उस मर्म और तत्त्व को ढूँढ़ते हुए, वहाँ तक पहुँचने की प्रक्रिया में वे पाठक को खोजकर पाने के सुख से सुखी कर देना चाहते हैं। उसे अपने ढंग से अपने लिए पाकर पाठक के मन में उसके विस्तार और उसके प्रदर्शन की सबसे ज्यादा सम्भावना बनती है।''
लीलाधर जगूड़ी
(पद्मश्री एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित)

''ये कविताएँ हृदय का उद्‌गार हैं, हृदय की बात है। प्रभविष्णु कविचित्त पर जीवन के प्रसंगों ने जो तरंगें उत्पन्न की, उनकी अक्षत अभिव्यक्ति सरल–सुगम भाषा में कवि का अभीष्ट है। ये जीवन–प्रसंग जाने–पहचाने, रोज–ब–रोज के होते हुए भी एक विस्तृत सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत होकर नया अर्थ ग्रहण करते हैं।''
– अरुण कमल, कवि एवं सम्पादक

''नये घर में प्रवेश, नये घर में प्रवेश नहीं, कवि का अपनी अन्तश्चेतना की चौखटों को पारकर अपने आप को पाने, खोजने का प्रयत्न हे। गहन आत्मविश्लेषणात्मक है कवि का दृष्टि। दुनिया के सारे कुएँ से लेकर–कई कविताएँ।''

–चित्रा मुद्गल, उपन्यासकार

''श्री नरेश अग्रवाल की इन कविताओं में समय और परिवेश के प्रति कवि की विनम्रता आकर्षित करती है। इनमें किसी प्रकार का भावुक आवेश या आक्रामक उबाल नहीं है, न अनुभव और भाषा की स्फीति। अभिव्यक्ति का यह अनुशासन इन कविताओं को प्रौढ़ और चिन्तनपरक बनाता है।''

–श्री विश्वनाथ तिवारी
कवि एवं सम्पादक, दस्तावेज

''आपकी सृजनात्मकता ने नये धरातलों को स्पर्श किया है। अपने आसपास के जीवन से यह संलग्नता इनकी एक विशिष्ट पहचान बनाती है। संवेदनात्मक गहराई में डूबी हुई इन कविताओं को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। आपकी मार्मिकता मन को छूती है।''

– विजय कुमार, कवि एवं आलोचक

''आपकी प्रकृति आधारित कविताएँ भी मात्र दृश्यचित्र नहीं हैं, उनमें मन बोलता है। कश्मीर को आपने सैरगाह की जगह संवेदना बनाया है। अगर इन पुस्तकों का वितरण

ठीक प्रकार से किया जाए तो ये समाज के लिये उपयोगी सिद्ध होंगी।''

– ममता कालिया, साहित्यकार

''आपकी कविताओं में बड़ी सहजता है। अनुभवों का निर्व्याज आवेग है। बड़ी आत्मीय स्वतः स्फूर्तता है।''

– विजेन्द्र, कवि एवं सम्पादक

''श्री नरेश अग्रवाल को वह दृष्टि प्राप्त है, जिस पैनी दृष्टि से कोई अपने चतुर्दिक का पर्यवेक्षण कर पाता है।''

–श्रवण कुमार गोस्वामी
पूर्व सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति
गृह मन्त्रालय, भारत सरकार

विषय-सूची

चित्रकार	12
मकान	13
कितने जमाने से	15
विज्ञापन	16
खिलाड़ी	17
नियंत्रण	18
फूल	19
कीड़े	20
नफरत	21
चीटियाँ	22
तूफान	23
तुम्हारा संगीत	24
मुलाकात के बाद	25
अखबार	26
हाथ	27
आधार	28
काम	29
समय	30
चित्र	31
कलम	32
तस्वीर	33
एक दुर्घटना के बाद	34
युद्ध	35
जाने से पहले ही	36

भविष्य के लिए 37
इच्छाएँ 38
अभी भी और कुछ देना है 39
शब्द 40
एक बात 41
आवरण 42
जो मिला है मुझे 43
ऊँचाई 44
प्यार उमड़ता है 46
उसे बताया गया 47
तस्वीरें 49
उसका प्रेम 50
डायरी में 51
हाथ–2 52
अत्मीयता 53
मेरा अतीत 54
सुबह से पहले 55
सुबह–सुबह 56
घटित होती हुई साँझ 58
समुद्र के किनारे 59
रेगिस्तान 60
समुद्र तट पर 61
यात्रा 62
सृजन रुकता नही 63
आधुनिकता 64
जमीन 66

प्रकाश	67
हरा रंग	68
छूट गया था वो रास्ता	69
जाड़े के फूलों को देखकर	70
बच्चे	71
एक संगीत समारोह में	72
कुछ बातें	73

❑❑❑

चित्रकार

मैं तेज प्रकाश की आभा से
लौटकर छाया में पड़े कंकड़ पर जाता हूँ
वह भी अंधकार में जीवित है
उसकी कठोरता साकार हुई है इस रचना में
कोमल पत्ते मकई के
जैसे इतने नाजुक कि वे गिर जाएँगे
फिर भी उन्हें कोई संभाले हुए है
कहाँ से धूप आती है और कहाँ होती है छाया
उस चित्रकार को सब कुछ पता होगा
वह उस झोपड़ी से निकलता है
और प्रवेश कर जाता है बड़े ड्राइंग रूम में
देखो इस घास की चादर को
उसने कितनी सुन्दर बनाई है
उस कीमती कालीन से भी कहीं अधिक मनमोहक।

❑❑❑

मकान

ये अधूरे मकान लगभग पूरे होने वाले हैं
और जाड़े की सुबह में कितनी शांति है
थोड़े से लोग ही यहाँ काम कर रहे हैं
कई कमरे तो यूँ ही बंद
खूबसूरती की झलक अभी बहुत ही कम
दिन ज्यूँ–ज्यूँ बढ़ते जाएँगे
काम भी पूरे होते जाएँगे।
खाली जगह से इतना बड़ा निर्माण
और चाँद को भी रोशनी बिखेरने के लिए
एक और नई जगह।
बच्चे खुश हैं दौड़–दौड़कर खेलते हुए
अभी उन्हें कोई रोकने–टोकने वाला नहीं
एक अच्छे भविष्य की ओर बढ़ता हुआ मकान
जैसे एक छोटी सी चीज को
बहुत अच्छी तरह से सजाया जा रहा है
हाथ की मेंहदी तो एक छोटा सा भाग होती है दुल्हन का
फिर भी इसके दरवाजे उतने ही महत्वपूर्ण
जिन पर पौधों की शाखाएँ झूलने लगी हैं
कुछ आगन्तुक गुजरते हैं पास से
इसे देखते हुए
कोई सम्मोहन उन्हें रोक लेता है
सभी थोड़ी–थोड़ी झलक लेते हैं
लम्बी हो या छोटी।

सारी थकान के बाद यह एक पड़ाव है
और कोई कैसे बढ़ता है सफलता की ओर
हर पल दिखला रहा है यह निर्माण।

❑❑❑

कितने जमाने से

कितने जमाने से वह
एक ही चीज बना रहा है
पहले मिट्टी को रोंदकर मुखौटे की शक्ल देता है
फिर उसका साथी उसमें रंग भरता है
सारे मुखौटों का आकार और रंग–रूप एक जैसा
एक ही तरह की प्रतिक्रिया व्यक्त होती है
सभी के चेहरें से,
सभी में एक भोली हँसी
और चेहरा जैसे बेवजह हँसता हुआ
शायद खुश आदमी इसी तरह से हँसते रहते होंगे।
आदिम जाति में कोई बनावट नहीं थीं
और अब तो चेहरे कितने बदल गए हैं
खुशियाँ भी लाती हैं हँसी क्षण भर को
और इस मुर्झाती हँसी में
होता है भय किसी दूसरी परेशानी के आने का
यह हँसी जैसे बीमारी से तो बचे, लेकिन मौत से नहीं
लेकिन अब वो कलाकार
नये साँचे कहाँ से लाये नये आदमी की हँसी के।
बड़े सस्ते हैं ये मुखौटे
दस रुपये भी कोई दे दे तो उसका एहसान हो
लगातार बनाता जा रहा है वो मुखौटे
लगातार बदलती जा रही है लोगों की हँसी
वो खुद भी शामिल है इसमें। ❑❑❑

विज्ञापन

तरह–तरह के विज्ञापन के कपड़ों से ढका हुआ हाथी
भिक्षा नहीं माँगेगा किसी से
वो चलेगा अपनी मस्त चाल से
बतलाता हुआ, शहर में ये चीजें भी मौजूद हैं
जिन्हें पहुँचाया जा सकता है
घर तक मिनटों में।
वह बढ़ता है सड़क के दोनों ओर स्थित पेड़ों के बीच से
अपना खाना चुराता हुआ।
महावत को गर्व है
नहीं जाना पड़ेगा उसे घर–घर माँगने
भीड़ भरी सड़कों पर करता रहेगा वह यात्राएँ
और कौतूहलवश लोग उसे देखते रहेंगे
धीरे–धीरे दरें भी बढ़ती जाएँगी
और हाथी अक्सर दिखायी देते रहेंगे
जंगल छोड़कर सड़कों पर
यह उनका अच्छा उपयोग।

❑❑❑

खिलाड़ी

गजब सा खेल है यह
इसमें खिलाड़ी हवा में गुलाटी लगाता है
फिर सीधे पाँव खड़ा हो जाता है डंडे की तरह
बेहद कठिन है यह
इसलिए लोग खड़े हैं इसे देखने
रोमांच जाग पड़ता है सबों के शरीर में
कई बार तो लगता है
वह ठीक से नहीं कर पायेगा इस खेल को
तुड़वा बैठेगा अपनी हड्डियाँ
और गिर जाएगा कमर के बल टेढ़ा होकर
लेकिन सबकी इच्छा है
वह कभी गिरे नहीं
खेल उसका चलता रहे।
साँस रुक जाती है लोगों की
जब वह लगभग जमीन छूने को होता है
और जमीन छूते ही वापस शुरू कर देता है
अपने खेल को
आनंद उतर आता है दर्शकों में
सभी थोड़े-थोड़े रुपये उसे दे देते हैं
हालाँकि वह किसी से कुछ नहीं माँगता
सिर्फ सारा ध्यान केंद्रित करता है खेल में।

❑❑❑

नियंत्रण

जिन रातों में हमने उत्सव मनाये
फिर उसी रात को देखकर हम डर गए
जीवन संचारित होता है जहाँ से
अपार प्रफुल्लता लाते हुए
जब असंचालित हो जाता है
कच्चे अनुभवों के छोर से
ये विपत्तियाँ ही तो हैं।
कमरे के भीतर गमलों में
ढ़ेरों फूल कभी नहीं आयेंगे
एक दिन मिट्टी ही खा जाएगी
उनकी सड़ी–गली डालियाँ।
बहादुर योद्धा तलवार से नहीं
अपने पराक्रम से जीतते हैं
और बिना तलवार के भी
वे उतने ही पराक्रमी हैं।
सारे नियंत्रण को ताकत चाहिए
और वो मैं ढूंढ़ता हूँ अपने आप में
कहां है वो ? कैसे उसे संचालित करूँ ?
कभी हार नहीं मानता किसी का भी जीवन
वह उसे बचाये रखने के लिए पूरे प्रयत्न करता है
और मैं अपनी ताकत के सारे स्रोत ढूँढकर
फिर से बलिष्ठ हो जाता हूँ। ❑❑❑

फूल

खामोश हरियाली के बीच
पर्वतनुमा इस जगह में
एक शांत कब्र ढकी हुई फूलों से
बार–बार निगाह जाती है उन पर
लगता है चेहरा शव का हमेशा ढका रहे
केवल फूल ही फूल दिखलाई दें,
सारे दुखों को ढक लेते हैं फूल
फूल ही हैं वे जिनकी तरफ आँखें दौड़ती हैं,
इनके ही भार से हल्का हो जाता है
किसी के भी छोड़ जाने का दुख

❑❑❑

कीड़े

जब कीड़े घुस जाएँ फल में
क्षीण हो जाता है उसका मूल्य
और जो मूल्यहीन है
फेंक दिया जाता है बाजार में।
हमने देर लगा दी
नष्ट होते हुए को देखने में
नाव में कब सुराख हुआ
मालूम ही नहीं पड़ा।
अपनी चलनी को बचाकर रखना है
तभी घुलेगी आटे की मिठास जीभ पर
जख्म हुए तो पाँव में वेदना की चुभन
और निहायत जरूरी है
लोहे के बक्से तक को मजबूत रखना
मधुमक्खी अपने डंक लेकर हमेशा सावधान है
सावधान है वह भीड़
जो बार-बार तालियाँ बजा रही
लेकिन उतने सावधान नहीं
इसे सुनने वाले लोग,
कीड़े अपना स्वभाव कभी नहीं छोड़ेंगे।

❑❑❑

नफरत

फँसने के बाद जाल में
कितना ही छटपटा ले पक्षी
उसकी परेशानी हमेशा बनी रहेगी
और उड़ान छीन लेने वाले हाथों से
प्राप्त हुआ भोजन भी स्वीकार करना होगा।
जिसने हमें जल पिलाया
भूल जाते हैं हम उसके दिए सारे क्लेश
और जो सबसे मूल्यवान क्षण हैं खुशियों के
वे हमेशा हमारे भीतर हैं
बस हमें लाना है उन्हें
कोयल की आवाज की तरह होंठों पर।
जल की शांति हमें अच्छी लगती है,
जब बहुत सारी चीजें प्रतिबिम्बित हो जाती हैं उसमें
लहरें नफरत करती हुई आगे बढ़ती हैं,
किनारे पर आकर टूट जाता है उनका दम्भ।
धीरे-धीरे सब कुछ शान्त
चुपचाप जलती मोमबत्ती में
मेरे अक्षर हैं इस वक्त कितने सुरक्षित!

❑❑❑

चीटियाँ

सामने चीटियाँ घूम रही थी
मेरे चाय से भरे कप-प्लेट को देखकर
वे उसके आस-पास मँडराने लगी थीं
थोड़ी देर में मेरी अँगुलियों की खुशबू से
मेरे पन्नों के आसपास भी,
जहाँ लिखी जा रही थी एक कविता
और चीटियाँ मुझे रोककर
शायद कहना चाहती हों कुछ
जबकि मेरे पास कुछ भी नहीं था उन्हें देने को
फिर भी वे चलती रही
भगाने पर भी लौट-लौटकर आती रहीं।
मैंने कप प्लेट को दूर हटा कर रख दिया
जैसे यही जड़ हों इनकी मौजूदगी की
अब मिली मुझे राहत
लेकिन तब तक आ चुकी थीं वे
मेरी कविताओं के भीतर।

❑❑❑

तूफान

यह कितनी साधारण सी बात है
रात में तूफान आए होंगे तो उजड़ गए होंगे घर
सुबह जागता हूँ तो
लगता है कितनी छोटी रही नींद
धूप के साथ माथे पर पसीना
पेड़ गिर गए, टूट गए कितने ही गमले,
मिट्टी बिखर गयी इतनी सारी
और सभी चीजें कहती हैं हमें वापस सजाओ
पूरी करो नींद हमारी भी,
सुना है छोटे मकानों को सजाना आसान होता है
बकरियाँ पाल लो तो कहीं भी चरती रहेंगी
लेकिन दूध तो अपना ही होगा
थोड़ा सा बोझ उठाओ कि हाथ में दर्द न हो
इतना कम पकाओ कि आग सुरक्षित रहे
और मैं तुम्हारे आने से पहले जाग पड़ता हूँ
कि जानता हूँ खुशियों,
तुम्हें मेरा स्वागत करना कितना अच्छा लगता है।

❑❑❑

तुम्हारा संगीत

कितने सारे पहाड़ देख लिए मैंने
कितनी ही नदियाँ
और संगीत बड़े-बड़े वादकों का
फिर भी सुनता हूँ जब
तुम्हारी ढोलक की थपथपाती मधुर आवाज
लगता है जैसे मैं जाग गया,
जाग गया हो चंद्रमा
इसके दोनों छोर के हिलने से।
सिर्फ मैं नहीं सुन रहा हूँ इस आवाज को
सभी सुन रहे हैं इस आवाज को
जहाँ तक जाती होगी यह
सभी के कान तुम्हारी तरफ
जैसे तुम उनमें एक शक्ति का संचार कर रहे हो
भर रहे हो धड़कन धीमी-धीमी
पारे के आगे बढ़ने जैसी।
तुम बार-बार बजाओ
मैं निकलता जा रहा हूँ दूर तुमसे
पूरी तरह ओझल
फिर भी तुम्हारे स्वर मुझे थपथपा रहे
जाग्रत कर रहे हैं मुझे अब तक।

❑❑❑

मुलाकात के बाद

जब मैं चीजों को समझता हूँ
वे कभी सुव्यवस्थित दिखाई नहीं देतीं
सभी में रुखड़ापन उजागर होने लगता है
एक दिन सब कुछ सही हो जायेगा,
उम्मीद छोड़ देता हूँ इसकी।
मैं अब किसी से भी मिलकर
उतनी संतुष्टि से विदा नहीं हो सकता
कुछ न कुछ छूट ही जाएगा कहना
एक बार में खेत, खोद नहीं डालते हल
हर बीज को खुली मिट्टी और हवा चाहिए
मैं इसी तरह से खुलता हूँ
फिर ढक लेता हूँ अपने आपको
इस तरह से धीरे-धीरे वृहद हो जाता हूँ मैं
मैं यहाँ मौजूद हूँ और सबको प्यार बाँटता हूँ
इस तरह से मेरा हृदय हमेशा सक्रिय रहता है
हमारी इस मुलाकात के बाद थोड़े से हम स्थिर हुए
थोड़े से हम बदल गए।

❑❑❑

अखबार

कितनी ही तरह के अखबार मेरे हाथों में
सभी प्रतिष्ठित और सब में दावा सच्ची खबरों का
कुछ की खबरें मिलती जुलती
कुछ में जो है दूसरे में नहीं
इस तरह से अनेक खबरों की बनती श्रृंखला को
ले लेते हैं हम हर सुबह हाथ में।
इनमें वैसी खबरें भी हैं
जिनका अभी अंत नहीं हुआ
वे केवल सूचना मात्र हैं
और जारी है अनुसंधान उन पर हर दिन।
फिर इन पुरानी खबरों से ही बनती जाएँगी नयी-नयी खबरें
कुछ थोड़ी दूर तक साथ देंगी अखबारों का
कुछ चिपकी रहेंगी वर्षों-वर्षों तक
एक दिन लगेगा हमें जैसे ये सारी खबरें एक जैसी ही हैं
केवल उनके पात्र बदल गए हैं,
उस दिन खत्म हो जाएगी सारी उत्सुकता हमारी,
लगेगा अब विस्तार से किसी भी खबर को पढ़ने की जरुरत नहीं
बस हेडलाइन की तरफ देखते हुए
पन्ने पलटते जाना है।

❑❑❑

हाथ

सभी संसर्ग जुड़ नहीं पाते
अगर ऐसा हो तो फिर ये अंगुलियाँ
अपना काम कैसे करेंगी।
मैं कभी-कभी मोहित हो जाता हूँ
आटा गूँधने की कला पर
जब सब कुछ एक साथ हो जाता है
जैसे सब कुछ एक में मिल गया हो
लेकिन आग उन्हें फिर से अलग करती है
हर रोटी का अपना स्वरूप
प्रत्येक के लिए अलग-अलग स्वाद।
मैं अजनबी नहीं हूँ किसी से
जिससे थोड़ी सी बात की वे मित्र हो गए
और मित्रता अपने आप खींच लेती है सबों को
दो हाथ टकराते हैं जीत के बाद
दोनों का अपना बल
और सब कुछ खुशी में परिवर्तित हो जाता है

❑❑❑

आधार

एक फूल के सहारे
दूसरे फूल बैठेंगे माला में।
जो काम शुरू हुए आरंभ में
केवल वे ही आधार नहीं हैं
बल्कि हर दिन जो कार्य हो रहे
वो भी आधार बनते हैं दूसरे दिन के लिए
ये आधार सीढ़ियों की तरह बढ़ते जाते हैं
पहुँच जाते हैं किसी दूसरे ऊँचे आधार पर
हर बिन्दु आधार है
जहाँ से रेखाएँ बढ़ती हैं
और जो काम अधूरे छोड़ दिये गए हैं दूसरों के द्वारा,
जिनमें बहुत सारा पैसा और समय नष्ट हुआ
उनमें भी आधार हैं संभावनाओं के
फिर से उन्हें ठीक किया जा सकता है
जहाँ से हम काम शुरू करें
आधार वहीं से बनने लगते हैं।

❑❑❑

काम

हम नौकरी में हो या व्यवसाय में
काम बँधे हुए हैं निश्चित दायरे में
उसी के अनुसार हमें काम करना और व्यस्त रहना है
सभी पर स्पर्द्धा का बोझ इतना भारी
कि हम चुपचाप बैठे नहीं सकते
चुपचाप बैठे तो
साथ काम करने वाले बैठने नहीं देंगे
क्योंकि हमारी गति से उनकी गति बढ़ती है।
इतने सारे कामों की श्रृंखला में बँधे रहने के बाद
बहुत कम समय बचता है व्यक्तिगत का
अब नयी–नयी तरकीबें और उन्नत किस्म के व्यवसायिक सृजन ही
बन गए हैं मन बहलाने के साधन
एक अनुशासन कठोरता का हमेशा हमें घेरे हुए
साधारण किस्म के आराम की गुंजाइश इसमें बहुत कम है।

❑❑❑

समय

खुशबू बहुत याद आती है
हरियाली बहुत अधिक याद आती है
और जहाँ कुछ भी नहीं रोमांचक
वहाँ से भाग निकलने की इच्छा जल्दी से जल्दी
मैं अपने समय को इसी तरह से
कितने ही हिस्सों में बाँट लेता हूँ
और कोशिश करता हूँ
आनंदित करने वाला समय
इसमें सबसे अधिक हो
बाकी समय बोझ की तरह है
चाहे वे आवागमन की परेशानियाँ हों
बिगड़ते हुए कामों का दुख
या नाराज लोगों के चेहरे
सभी से दूर हो जाना चाहता हूँ।

❑❑❑

चित्र

चित्र से उठते हैं तरह-तरह के रंग
लाल-पीले-नीले-हरे
आकर खो जाते हैं हमारी आँखों में
फिर भी चित्रों से खत्म नहीं होता
कभी भी कोई रंग।
रंग अलग-अलग तरह के
कभी अपने हल्के स्पर्श से तो कभी गाढ़े स्पर्श से
चिपके रहते हैं,
चित्र में स्थित प्रकृति और जनजीवन से।
सभी चाहते हैं गाढ़े रंग अपने लिए
लेकिन चित्रकार चाहता है
मिले उन्हें रंग
उनके व्यक्तित्व के अनुसार ही,
जो उघाड़े उनका जीवन सघनता में।
अक्सर यादें रह जाती हैं अच्छी कलाकृतियों की
रंग तक भी याद आते रहते हैं
लेकिन जो अँगुलियाँ गुजर गयी हजारों बार
इन पर ब्रश घुमाते हुए
कितना मुश्किल है समझ पाना
कौन सी भाषा में वे लिख गयी
और सचमुच क्या कहना चाहती हैं वे ?

❑❑❑

कलम

कलम काटकर मिट्टी में रोप दी गयी
और वो जमीन में घुलमिल गयी
कितना आश्चर्यजनक है यह मिलन
मिलन जो बड़े वृक्ष की शक्ल में बाहर आता हुआ
एक वृक्ष के छोटे से टुकड़े में भी इतनी सामर्थ्य!
इसी तरह से डालियाँ
अनन्त संभावनाएँ ढूँढ़ते हुए
करती है इंतजार
इन अनाथ बढ़ते बच्चों की तरह
उन्हें भी मिले कोई उपयुक्त स्थान, मिलें अच्छे हाथ
डालियाँ देखती रहती हैं हमारी ओर
करती रहती हैं हमारा इंतजार।

❑❑❑

तस्वीर

तस्वीरें अच्छी आएँगी
इन्हें अच्छी तरह से खींचा गया है
ये अपने गाढ़े रंग में चमकदार
जैसे अब तब बोल पड़ेंगी
और हम सब तैयार हैं उसे सुनने के लिए।
याद आता रहता है तुम्हारा चेहरा हमेशा
उसे कैसे भुलाया जा सकता है
लेकिन इस तस्वीर को देखना
बहुत अधिक सुकून देता है,
इस तस्वीर में तुम घर के भीतर हो
ये पर्दे–मेज, लैम्प, कुर्सियाँ
सभी तुम्हारे साथ
जैसे तुम बिल्कुल मेरे सामने बैठी हो।

❑❑❑

एक दुर्घटना के बाद

अनाज के दाने निकाल लेने के बाद
हल्की हो जाती हैं फसलें
बचा-खुचा मवेशियों के लिए या आग तपने के लिए,
सूरज के डूब जाने के बाद
नष्ट हो जाता है रंग किसी भी भूखंड के
तापमान गिरा और कठिन हो गयी सर्दभरी रात।
इस रात की तहस-नहस भरी जिन्दगी में
कहाँ पर ठौर मिल सकती है,
मालूम नहीं है उन्हें
वे अकेले नहीं हैं, वे बहुत सारे लोग हैं एक साथ
जो अभी-अभी यहाँ पहुँचे हैं
उन्हें न तालाब की चिन्ता है न ही पेड़ देखने का मन,
सब की एक ही चिंता है
कि अगर उनकी खुशियाँ बचेंगी भी तो
न जाने वे किसी तरह की होंगी।

❑❑❑

युद्ध

फुर्तीले शरीर और शानदार घोड़े
चरों दिशाओं में सिहरन पैदा करते हुए
एक इशारे से जंग की ओर दौड़ते हुए
और बिल्कुल साफ–सुथरी वेशभूषा लड़ाकों की
सभी की एक जैसी, वातावरण में प्राण फूँकती हुई
सभी एक जैसे कि एक गिरे तो
दूसरा ठीक उसी तरह से उठ खड़ा हो
वे दौड़ते हैं जैसे कोई भयानक आग को रोकने को
सभी तरफ आग ही आग
और यह शरीर से निकलती युद्ध की आग
प्राण ले लेती है अपनों के ही
युद्ध खत्म होने पर बच जाते हैं सिर्फ अवशेष,
थके हुए घोड़े और रोष से पीड़ित अधमरे लोग
किसी में कोई चमक नहीं
अब आँखें उन्हें देखने से भी कतराती हैं।

❑❑❑

जाने से पहले ही

भूमि जानती है
उसे इस तरह छोड़ा नहीं जाएगा
फिर नये-नये बीज उसके हृदय में आकर संरक्षण लेंगे
इन रास्तों में कभी न कभी काँटे चुभेंगे ही
और हमें यकीन हो जाएगा उस दिन
कि हमारा सावधान रहना कितना जरूरी था
हम कभी तृप्त नहीं होते हैं इंद्रधनुष को एक बार देखकर
बार-बार उसे देखने की इच्छा जागृत होती रहती है
और न ही साँसों से कभी मुक्ति चाहते हैं हम
जबकि हमारे जाने से पहले ही
लोग ढूँढ़ रहे होते हैं दूसरे हाथ
जो हमारे छोड़कर जाने के बाद
आसानी से स्वीकार कर लें उन्हें।

❑❑❑

भविष्य के लिए

एक परिवर्तन की चाह जैसे डालियाँ अधिक प्रौढ़ हो गयी हों
वह धीरे से सर झुकाता फिर उठा लेता था
जैसे अभी बहुत अधिक भार ले सकता है
वह एक नयी दिशा तलाशने लगा था
जहाँ रुचिकर काम और अच्छी तनख्वाह हो,
इतने अधिक सुदृढ़ आधार वाला काम
कि कम से कम पाँच वर्षो तक दूसरी ओर झाँकना न पड़े
अपने लिए अत्यधिक चिंता कर रहा था वो
कल बच्चे होंगे और परिवार बूढ़ा हो चला होगा
अभी एक शक्ति है कि किसी भी काम को वो सीख ले
नये काम को भी पुराने की तरह कर सकता है वो
इस बार जो काम मिलेगा उसे
उसी पर भविष्य का आधार होगा
पुरानी जगह बस समय कटता रहा
सिर्फ लोभ था अत्यधिक अनुभव पाने का
अब लोभ है अपना भविष्य सँवारने का।

❑❑❑

इच्छाएँ

जब इच्छाएँ छोटी-छोटी हों
कितना आसान हो जाता है उन्हें पूरा करना
मैं जल्दी ही उन्हें छू सकता हूँ
इसलिए अत्यधिक उत्साह है मुझमें
दूरी इतनी कम है कि निराश नहीं हो सकते हम
मेरी घड़ी को कितना कम चलना पड़ेगा
पैरों को विश्राम की जरूरत नहीं
दिनों को अँगुलियों पर गिन सकता हूँ
एक घूँट में सब कुछ पी गए
और तृप्ति ठीक हमारे सामने है।

❑❑❑

अभी भी और कुछ देना है

कुछ भी बचाकर नहीं रखना है
सब कुछ उसे सौंप देना है
यह अटूट विश्वास कि वह सब कुछ लेगा
पी जाएगा झरने की तरह उमड़ते वेग को
इतना कुछ पैदा होता है
इतना कुछ दिया जाता है
फिर भी ख्वाहिश बची हुई है कि और कुछ देना है
कोई ताकत जैसे कुलाँचे भरते हुए
बहुत दूर चली जाती है
फिर लौटती है
हर दिन प्यार नये तरीके से साथ निभाता है
कभी खत्म न होनेवाली चीज मेरी साथी बने
ऐसी इच्छा से मैं तुम्हें गले लगाता हूँ
सारी धरती मेरे तन को ढक लेती है
हमारा प्यार चुप हो जाता है।

❑❑❑

शब्द

सभी के साथ सलाह मशविरा
कितनों का ही अनुभव सर आँखों पर
खून तक में उतर आता है एक अच्छी पुस्तक के प्रति प्यार
छोटे–छोटे बच्चे तक
प्यार करते हैं नयी–नयी किताबों को
वे जिल्द चढ़ाकर रखते हैं सुरक्षित सभी को
इनमें लिखी एक–एक चीज का महत्व
और उत्तर ही उत्तर माँगते हैं हर पाठ।
जो कम पढ़े–लिखे हैं
उनकी दुनिया में थोड़े से शब्द हैं
फिर भी जीवन यापन तो हो ही जाता है
मैं भी लिखता हूँ हर दिन थोड़े से शब्द
जो हैं मेरी आत्मा से निकले हुए
दूसरों से आत्मीय होने के लिए
वे ढूँढ़ते हैं लोगों के बीच उनके फुर्सत के क्षण।

❑❑❑

एक बात

जागने वालों के लिए एक पुकार ही काफी है
सोने वालों के लिए सहारा किसी कुर्सी का भी
एक ही इशारा चुप रहने के लिए
एक ही इशारा बोलने के लिए
हम कभी कितने अपने लगते हैं, दूसरों को
और कभी कितने पराये
और यह कितनी सुन्दर बात है–
कितने ही तीखे स्वाद से झल्लाएँ हम
लेकिन दोष अपनी जीभ पर कभी मढ़ा नहीं हमने।

❑❑❑

आवरण

अचानक कोई जाग जाएगा
और देखेगा जो उसने खोया था
पा लिया है
और हर पायी हुई चीज को
रखना पड़ता है सुरक्षित अपने पास ही
और संचय पुराने होते जाते हैं
समय उन्हें ढकते चला जाता है
आवरण पर आवरण
और जीवन के आवरणों से ढकी हुई चीजों से
किसी बहुमूल्य को निकाल लेता हूँ एक दिन
सारी सफाई के बाद एक उत्तम खनिज
जीवन के किस रस में ढालना है इसे
अब यह हमारी बारी है।

❑❑❑

जो मिला है मुझे

उपदेश कभी खत्म नहीं होंगे
वे दीवारों से जड़े हुए
मुझे हमेशा निहारते रहेंगे,
जब मुझमें अपने को बदलने की जरूरत थी
उस वक्त उन्हें मैं पढ़ता चला गया
बाकी समय बाकी चीजों के पीछे भागता रहा,
अत्यधिक प्रयत्न करने के बाद भी
थकता नहीं हूँ
कुछ न कुछ हासिल करने की चाह।
जो मिला है मुझे
जिससे सम्मानित महसूस करता हूँ
गिरा देता हूँ सारी चीजों को एक दिन
अपने दर्पण में फिर से अपनी शक्ल देखता हूँ
बस इतना काफी नहीं है
इन बिखरी चीजों को भी सजा कर रखना है
वे सुन्दर–सुन्दर किताबें
वे यश की प्राप्ति के प्रतीक
कल सभी के लिए होंगे
और मैं अकेला नहीं हूँ कभी भी।

❑❑❑

ऊँचाई

क्या हमें किसी की ऊँचाई अच्छी नहीं लगती
या खाते हैं हम भय
सामने खड़े किसी ऊँचे कद से।
पहाड़ पर चढ़ जाता हूँ मैं उसकी चोटी पर
तो पहाड़ से ऊँचा तो नहीं हो जाता
या नदी के तल से भी
झुका लूँ अगर अपने आप को
फिर नीचा नहीं हो जाता नदी से।
हवा ही हमारी प्रेरणा का सबसे अच्छा हल
किसी भी ऊँचाई पर रह सकती है यह
वैसी ही हैं हमारी संवेदनाएँ
अगर बढ़ती जाएँ
फिर कोई भेद-भाव नहीं देखतीं।
सभी के पास एक नाभि है
जहाँ से जुड़े थे हम और दूर हुए
उसके निशान सभी की देह पर
इस तरह से सबका था एक ही आरंभ
और वे सोये रहे कई दिनों तक बिस्तर पर
और अपनी ही इच्छा शक्ति से सीख ली
जरुरत खड़े होने की
और जितनी मेरी जरूरत थी
उतनी ही दूरी मैं तय करता रहा।
मेरी ऊँचाई भी उतनी ही

जितना धरती से मैं ऊपर
बाकी भी सभी इसी तरह से।

❑❑❑

प्यार उमड़ता है

प्यार उमड़ता है फिर बिखर जाता है
प्यार लेने के लिए कितना अधिक प्यार देना होता है
और कितना अधिक झुकना होता है पिता के पास
जबकि अधिक दिनों तक रहेंगे नहीं वे
सिर्फ वह ही मिलता है उनसे बार-बार
फिर भी संतोष है पिता को
चलो इमारत का कोई कोना तो है उनके हाथ में,
यह भी सँभाल लेगा बाकी लोगों को।
परिवार में थीं कितनी ही कुर्सियाँ
लेकिन सबसे अलग जगह पर बैठा करते थे वे
कई उनसे नजरें चुरा कर चुपचाप चले जाया करते थे
और वे इंतजार करते रह जाते थे उनके सामीप्य का।
दिन पर दिन गुजरते जाएँगे इसी तरह से
उनकी विदाई के दिन तक
सारे लोग निकल चुके होंगे
दूसरे शहरों में काम पर
सिर्फ वह ही रह जाएगा इस घर में अकेला
उसी के सहारे बाकी लोग आते-जाते रहेंगे,
यही सोचकर एक विश्वास की नींद सो जाते थे वे हर रात,
इस सबसे छोटे लड़के से मिलने के बाद।

❑❑❑

उसे बताया गया

यूँ ही घनिष्ठ नहीं हो सकते थे वे
लेकिन एक लम्बी तारीफ के बाद
उसने अपने आपको
उसके बेहद करीब पाया
उसे बताया गया–
वह एक आश्चर्यजनक प्रतिभा है
जिसमें विविधताएँ इतनी हैं कि
इनमें से कोई एक भी
किसी का मन मोह ले सकती है,
वह स्वयं से तराशी गयी कला है
जिसे सिर्फ लोगों के बीच आना है,
अपने बोझिल पर्दे को हटाकर,
सुनते–सुनते, आग की तरह
चमक उठा था उसका चेहरा
मानो रोम–रोम उसका दहन होने को तैयार हो
वे बातें उसे बेहद अच्छी लगी थीं
और वे बार–बार अपने को
उसके मन के भीतर ही भीतर दोहराने लगी थीं
जैसे वहीं से उनका जन्म हुआ हो
और उसकी इतने दिनों पुरानी अनाम सोच को
एक नाम मिल गया था।
यह घटना सचमुच आश्चर्यजनक थी
यह पहली बार की गयी उसकी प्रशंसा थी

वह अब तब पूरी तरह पिघलने को थी
उसे लगा वह ख़ुशियों को बर्दाश्त नहीं कर पायेगी
और उसने अपना सिर उसके कंधों में रख दिया।

❑❑❑

तस्वीरें

बचपन की सिर्फ दो या तीन तस्वीरें थी हमारी एक साथ
सब में, मैं उनकी बगल में खड़ा हुआ
पर किसी में भी हँसता हुआ नहीं
मालूम नहीं यह कैसी चुप्पी थी यह
जो हमेशा हमारे साथ रही
शायद बचपन से ही मैं अपना भविष्य
अलग तरह से सोचता था,
और शायद, वे अलग तरह से रखना चाहते थे मुझे।
मेरे अपने बेटे के साथ भी कम ही हैं तस्वीरें
उनमें भी हम हँसते हुए नहीं
बस पिता और पुत्र की तरह एक साथ खड़े हैं हम।
हर दिन बड़ा होता जा रहा है बेटा
अपने ख्वाब, अपनी खूबसूरत आँखों से देखता है
और मेरे पास आकर भी अपनी ही दुनिया में खोया हुआ
कभी कोई मजाक की बात आती तो हम हँसते भी
लेकिन तस्वीरें कौन खींचता हमारी उस मौके पर
ऐसा नहीं है कि हम हँस नहीं सकते साथ-साथ
जब वह छोटा था हम हँसे थे कई बार
एकदम शुरूआत में, जब वह बात-बात पर हँसता था
इतनी प्यारी हँसी कि जिसका कोई साथ नहीं छोडना चाहता था
अब तो समय के साथ कितना बदल गया है वह
उसकी दाढ़ी के कड़े-कड़े बाल
उसके हँसने से पहले ही तन जाते हैं हमारी ओर।❑❑❑

उसका प्रेम

उसका प्रेम
झलक दिखला–दिखला कर
अपने सौन्दर्य के
अनेक रंगों से रंगता रहता है मुझे ।
ये साँसें कैसी हैं जो टूटती नहीं हैं कभी
थक जाता है सिर्फ शरीर
और मिलने की चाह कभी कम न होती हुई
मालूम नहीं कहाँ तक इतने अधिक जुड़े हैं हम
कभी–कभी लगता है
हम सुन्दरता के मोह से दूर चले गए हैं
अब हम स्वतंत्र आकाश में हैं
सारी बाह्य ऊर्जाओं की धड़कनों से दूर
हम बस यहाँ हैं
बलिष्ठता से आपस में बँधे हुए
यहाँ घटने–बढ़ने जैसा कुछ भी नहीं है
तृप्ति और अतृप्ति से दूर
हमारा एक दूसरे में होना जैसे
इंद्रधनुष में रंगों का मिलन।

❑❑❑

डायरी में

आज चारों तरफ कितना खाली है
कहीं भी जा सकता हूँ मैं आसानी से
कितना तरल हो गया हूँ मैं
कि किसी लैम्प की रोशनी भी मुझे नहीं रोकती
न ही ये पैदल सवार या गाड़ियाँ
सभी से जैसे भिन्न हूँ मैं
सड़क पर पानी की तरह बहता हुआ
कोई खुशी छू चुकी थी मुझे कभी की
अब मुझे उसका पता चला,
एक नशा सा पूरे शरीर में
मन करता है इसे बस सँभाले रहूँ
इसी में डूबा रहूँ
रुकता हूँ तो बस सारे सोच बंद
सपनों की सवारी से बाहर आ गया हूँ जैसे
लिख सकता हूँ आज की रात मैं यही बात
सोने से पहले
अपनी इन डायरी के पन्ने में।

❑❑❑

हाथ - २

सभी पल मेरे शांत
एक रेशम के वस्त्र की तरह
और तुम्हारा स्नेह मेरे हृदय को छूता हुआ
बाहर कितना अधिक कोलाहल
फिर भी मैं तुम्हारी गहराई में उतरता हुआ,
चाँद तारे उड़ रहे हैं आसमान में
सारे पत्तों में परछाई
और डालियों जैसे कोमल हाथ तुम्हारे
रखे हुए मेरे पीछे
जैसे किसी संगमरमर की शिला पर टिके हुए।

❑❑❑

आत्मीयता

उसने कितनी आत्मीयता से कहा था,
आपने दावत देने का वादा किया था और नहीं आये
उसके शब्दों में एक मीठा आग्रह था
साथ न बैठ पाने का सहज दुख
और वो जानती थी कि उसका हक मुझ पर कितना कम था
यह मुलाकात एक सुंदर दृश्य की तरह
और उसे सब कुछ भुला देना था।
उस दिन अचानक ही हम एक–दूसरे को अच्छे लगे थे
कोई कारण नहीं था बातें करने का
फिर भी हमारी उत्सुकता ने हमें मिला दिया
वह हँसी थी जैसे पहली बार में ही
अपना परिचय देने को इच्छुक हो
लेकिन मैंने पाया असीम था उसके पास देने को
बातों ही बातों में और अधिक जीवंत होती जा रही थी वो
कोई विवरण नहीं था उसके पास
किसी तरह का कोई स्पर्श भी नहीं
बस अपनी कोमल भावनाओं का इजहार
और मुश्किल हो रहा था मुझसे यह सब कुछ सहना
शायद इसलिए कहा था मैंने उससे
अलविदा! कल फिर मिलेंगे
और आज बस उससे क्षमा माँगने आया था।

❑❑❑

मेरा अतीत

ये फूल सिर्फ एक दिन में नहीं मुर्झाते
धीरे-धीरे मुर्झाते हैं,
कितनी ही रातें बीतने के बाद
और वो एक दिन समझ गया था
अब पहले जैसा वो नहीं रहा
वह इतना कमजोर
कि दूसरे सब उस पर हावी
कहीं घोड़ों के हिनहिनाने की पुकार
तो कहीं जीते हुए योद्धा
चमकदार तलवारें लेकर आगे बढ़ते हुए।
सुना था उसने
अधिक पानी हो तो होली का रंग फीका हो जाता है
और कितने सारे दुखों की आइ से
झाँकता है वह सबको,
अब एक धमक नहीं उसके पास चूहों तक को भगाने के लिए
जरा सी हो-हो की आवाज से खुद ही डर जाता है
कहा था उस दिन उसने हम सब से
तुम मेरा अंत देख रहे हों न
कोई दुख नहीं न तुम्हें
मेरा अतीत लेकिन बहुत सुंदर था
उसे देखा होता तो दुखी जरूर होते तुम।

❑❑❑

सुबह से पहले

अभी सुबह नहीं हुई है पूरी तरह से
हल्का–हल्का अँधेरा
बार–बार खिड़की से देखता हूँ
जल्दी सुबह होने का इंतजार
ढूँढता हूँ सूरज को
तलाशता हूँ उस जगह को
जहाँ से होगा उदय यह
शायद उन पहाड़ों के पीछे से
या उन जंगलों के ऊपर से
अभी भी देर है
थोड़ा सा ही उजाला है
जिसमें दिखता है लिद्दर नदी का पानी बहता हुआ
बिल्कुल साफ–सुथरा बर्फ की तरह
और कितना अनभिज्ञ हूँ यहाँ, तलाशता हूँ दिशाएँ
कहाँ है वो पूरब और कहाँ है उसका सूरज
और सभी सोए हैं
मार्गदर्शन के लिए कोई नहीं है यहाँ

❑❑❑

सुबह-सुबह

एक धरती की चादर है
जिस पर हम टहलते हैं
स्वर्ग के साथ-साथ चलते हैं
क्या यही है हमारा स्वर्ग
खुशियाँ-खुशियों के साथ चलती हुई
मन की इससे अधिक
और अच्छी चाह क्या हो सकती है।
किसी की चाहत हो तो उस रात मिल जाए
किसी की चाहत हो तो उसे दिन मिल जाए
और इस वक्त, मैं हल्की-हल्की धूप को भी
अपने साथ चलते देखता हूँ
देखता हूँ अपने तंदुरुस्त पैरों को
जो धीरे-धीरे आगे की ओर बढ़ रहे हैं
संभालना है जिन्हें जिम्मेवारियाँ आज दिन भर की।
अभी सारे पशु-पक्षियों में ताजगी है
और आकाश में नयी चेतना का संचार
जिससे बादल धीरे-धीरे हट रहे हैं
और ये क्षण इतने कीमती हैं
लेकिन इनका कभी मूल्य नहीं माँगा गया
उदार धरती को हमारे चलने पर हमेशा प्रसन्नता हुई,
और जिनका मूल्य बड़ा और भारी था
वे बड़ी ठोस थीं
हमेशा हमारे अहम् को बढ़ाती हुई।

लाचारीवश खोलता हूँ अब
मैं सुबह के जूते
जिन्हें रख दिया जाना है
अंधकार के एक बक्से में
और कल सुबह की उम्मीद में
भारहीन होकर सो जाते हैं वे।

❑❑❑

घटित होती हुई साँझ

साँझ से पहले हमें वहाँ पहुँचना है
और देखेंगे हम सूर्यास्त।
यह किनारे की भूमि
जहाँ से धीरे–धीरे सागर में अस्त होता है सूरज,
बस आखिरी किरणों की झलक
नारियल के दो पेड़ों पर
जिनके बीचोंबीच से गुजरती हुई छोटी सी नाव।
हमारी हर पल दृष्टि नाव पर
मद्धिम होती जा रही है जिसकी झलक
बैठा हुआ आदमी उसमें
दिखाई देता है जैसे बिंदु पेंसिल का।
किरणों का गिरना और उठना लहरों पर
और लौटते हुए पक्षियों की परछाई का स्पर्श जल पर।
यहाँ से कितने सारे पक्षी उड़े
सबने वापसी दर्ज की लौटने की,
अंतिम पक्षी की उड़ान के साथ
अस्त होता हुआ सूरज
चारों तरफ अंधेरे की लकीरें
अपना काला रंग भरती हुई
और हमारी उत्सुकता खत्म हो चुकी हैं अब।

❑❑❑

समुद्र के किनारे

कितने सारे पेड़ चाहिए नारियल के
इस प्रदेश को हरा-भरा दिखने के लिए
और बगल से, वेग से आगे बढ़ता पानी समुद्र का
जिस पर जलते हुए सूर्य की चिनगारी ठंडी होती हुई।
इस रेतीले तट पर निशान ही निशान लोगों के
जैसे सभी को पहचान दे सकती हो यह जगह।
हवा उठती है बार-बार लहरों की तरह
मेरे पंख हों तो मैं भी उड़ चलूँ।
चारों तरफ यात्री ही यात्री
और सामने सूचना पट पर लिखा है
खतरा है पानी के भीतर जाने से
और एकाएक अनुशासन को टटोलता हूँ
मैं अपने भीतर।
और यकीन करता हूँ कि
खुशियों के साथ इनका भी कुछ संबंध है।

❑❑❑

रेगिस्तान

रेगिस्तान हो या पथरीले पहाड़
हरियाली फूटकर बाहर आ जाती है
जैसे वे आत्मा के रंग ही हों
थोड़े-थोड़े हरे रंग भरे हुए यहाँ
जिन्हें कभी ओस नसीब नहीं होगी
न ही बारिश।
फिर भी ये धीरे-धीरे बढ़ते रहेंगे
चमकते रहेंगे हमारी आँखों में समाकर।
जीवन एक से निकलता है
समा जाता है दूसरे में
यहाँ सुनसान सी दुनिया
रेत में भी रेत के कण उड़ते हुए
थोड़े से लोग मौजूद
बाजार से ऐतिहासिक चीजें खरीदते हुए
यहाँ के बाजार कभी नहीं बदलेंगे
वे छोटी-छोटी चीजें ही हमेशा बेचेंगे
और मेरे हाथों में जो तस्वीरें हैं
इन पुरानें अवशेषों की
यह इतिहास का एक पन्ना है
जिसे कागज में सुरक्षित
ले जा रहा हूँ वापस ।

❑❑❑

समुद्र तट पर

इतने लोगों की भीड़
इनके साथ रहूँ या साथ छोड़ दूँ?
मैं अकेला समुद्र तट पर
एक मात्र कुर्सी पर भी कर सकता हूँ विश्राम
चारों तरफ जल, जैसे नहीं हो कुछ इसके सिवा
अगर कुछ है तो मैं ही हूँ इतना भर ही।
इस सुबह की धूप में कोई मजाक नहीं करता
न ही चढ़ता है किसी पेय का नशा
आँखें ढूँढ़ती रहती हैं रंग-बिरंगी बोटें
और यात्री उन पर आते-जाते हुए।
हर छोटा बच्चा रेत से घर बनाना चाहता है
जैसे यह हमारी पैदाइशी ख्वाहिश
और भाग रहे हैं जो मछलियों के पीछे
जाल उनके पँजों की तरह हिलते हुए
पूरे बाजार में समुद्री खाद्य पदार्थ टँगे हुए
जैसे चित्रित करते हों सूखे समुद्र को।
कितना कुछ है यहाँ
और मैं देखता भर हूँ सिर्फ समुद्र की लहरों को
लहरें मेरे पास आती हुई, मुझसे दूर जाती हुई
मुझे अपने पास आने का प्रलोभन देती हुई।

❑❑❑

यात्रा

कैसी होगी वो भूमि मालूम नहीं
न ही कि कैसी होगी वहाँ की जलवायु
और किस तरह के पेड़ और पक्षी हमारी राह देखते हुए
जब तक हमारी साँसें हैं
तब तक ऐसी इंतजार करती चीजों तक पहुँचेंगे हम।
दिन और रात को किसी तरह
काट लेते हैं हम,
आँखें हमेशा उन सुनहरे दिनों की खोज में
हर दिन हमारा एक तैयारी में बदलता हुआ
एक राह देखते रहते हैं हम
कब एक उड़ान हो और उन तक पहुँच जाएँ
क्या-क्या है यहाँ सबसे पूछते हैं हम,
दूसरे के बताये चित्रों से संतोष नहीं है हमें
सारे चित्र हमारे
उनकी जड़ें हमेशा मौजूद हमारे मस्तिष्क में
मत पूछो पसीना क्यों आने लगता है चलने पर
अनदेखा कर दो थकान को
देखो कि अभी भी हम क्या-क्या खोज रहे हैं
कितना कुछ देखना अभी बाकी है।

❑❑❑

सृजन रुकता नहीं

काफी तेज बारिश हुई है
लगा एक मुश्किल समय सामने है
फूलों की मुश्किल कि उन्हें धोने की जरूरत नहीं थी
और बेवजह उनके धुले चेहरे मुर्झाने लगे
इतना अधिक पानी कि पत्ते जरूर चमकने लगे।
सभी तरफ से घिरे बादल भी
रोशनी को नहीं रोक सकते
मैदान जल से भरे हुए
अब लोग क्या काम करें
वे चुपचाप थके हुए से
धूप का करते हुए इंतजार
गुलाब के काँटे बिल्कुल धारदार
पत्तों की नोक तक दिखती है
पक्षियों के बिना सूना आकाश
फिर भी सृजन रुकता नहीं
घास में हरियाली पहले से अधिक असरदार।

❑❑❑

आधुनिकता

ये कितने ही अनजाने चेहरे
जिन्हें हम देखते हैं रोज
कितनी ही बार उनके पास से गुजरते हैं
कभी साथ भी बैठ जाते हैं
सफर में
लेकिन हममें दूरियाँ हैं
नीचे से ऊपर तक की
दूरियाँ सपने और वास्तविकता जितनी ।
सभी का मिलन संक्षिप्त होता है
टुकड़ों-टुकड़ों में बनते-बिखरते संबंध
और साँसों का प्रयास
कि जल्दी ही हम पहुँचें अपने काम पर।
किसी ने गिरे हुए आदमी की मदद की
यह उपकार थोड़ी देर में खत्म हुआ
और भूल गए लोग सारी गाथा।
एक कहानी से कुछ सबक लिया गया
फिर वो किताब खुली ही नहीं वर्षों तक।
दिन के उजाले कितने ही प्रकाशित कर दें
कितनी ही सारी चीजों को
आधुनिकता हमें बहुत कम देर ही
ठहरने देगी उस छोर तक।
प्यार से देखता हूँ एक पल इस तोते को
मुस्कान से वो चोंच खोल देता है

मेरी ख़ुशी को वो देखे
उससे पहले ही मैं उससे दूर चला जाता हूँ।

❑❑❑

जमीन

सिर्फ तीन कट्ठा जमीन पाने का मकसद था मेरा
और मैंने दाँत गड़ाए रखे थे अपनी जिद पर
कि किसी तरह से भी हासिल करके रहूँगा मैं इसे
हौसले बुलंद होते थे मेरे हर दिन
और चेहरे पर तनाव आ जाता था घर लौटते-लौटते
और तनाव उस दिन चरम पर था
जब यह भूमि मेरे पास थी
इस पर कहीं घास तो कहीं भूरि मिट्टी
मैं इसके बीचों-बीच खड़ा
जैसे सारी जमीन की धूरि मैं ही हूँ
इस बीच, कितनी ही बार आवाज निकली होगी
मेरे भीतर से,
कि मैं इस जमीन का मालिक बन गया हूँ
मेरी मालिकियत जैसे इसके कण-कण पर राज करती है
और मैं अपने अधिकार को अपने कब्जे में रखकर
गर्व से चलता हुआ
कितनी रौनक से भरा हुआ महसूस करता हूँ।

❑❑❑

प्रकाश

हर अँधेरे की भूख
कि उसे केवल प्रकाश चाहिए।
अपने अंतिम क्षणों तक भी
आँखें मूँदना नहीं चाहता कोई
प्रकाश हमें थोड़ा सा मिला
यही हमारा दुख है।
मेरी सारी गतिविधियों में शामिल है प्रकाश
यह मेरे साथ उठता और बैठता हुआ।
चाहे कितना भी अँधेरा न हो जाएँ
गुम हो जाएँ सारी बत्तियाँ
एक अंधकार चारों ओर जैसे पानी के नीचे हम दबे हुए
फिर भी हम तड़पेंगे आँखें खोलने के लिए
मैं इसी तड़प को देखता हूँ दिन-रात
कुछ है जो मेरे भीतर
जो अपना मार्ग ढूँढ़ता है
और ये शब्द उसी के माध्यम से
अपनी आँखें खोलते हैं कागज पर।

❑❑❑

हरा रंग

पक्षियों को हरा रंग लगता है सबसे अधिक प्यारा
और मुझे भी सब कुछ सूना–सूना
बिना पेड़ों के।
पत्ते झड़ जाएँ तो रात जैसा लगता है
जैसे आँखों से हरा रंग ही फीका होने लगा
और सोचता हूँ मैं नित्
अगर हरियाली को न देखूँ
भूल ही जाऊँ वे सारे सौन्दर्य स्थल पूर्व के।
मिलता है हमें जो रंग परिचित हर दिन
जुड़ा हुआ हमारे पुराने रंगों से
यादें मजबूत कर देता है हमारी पुरानी
और बचे रह जाते हैं
हमारे सपने सारे इसी तरह से।

❑❑❑

छूट गया था वो रास्ता

छूट गया था वो रास्ता हमारी गलती से
और दूसरे रास्तों से भी गुजर कर
कुछ हासिल नहीं कर पाये हम
दौड़ते रहे हम यहाँ से वहाँ तक
जैसे यह ही सही हो सकती थी
हमारे लिए जगह,
बेहद उतावलापन था
कि दौड़े और छू लेंगे वह छोटी सी दूरी
लेकिन सभी जगहों पर
सभी चीजों का हल नहीं था
कहीं आँख बंद तो कहीं कान बहरे
और अंत में हम पसर गए
परेशानी भरी उधेड़बुन में
उस समय लगा वह पहली भूमि ही सबसे सही थी
वहाँ सब कुछ था
बस हाथ आने के लिए थोड़ा सा धैर्य चाहिए था
थोड़ा सा और विश्वास रखते
मिल गयी होती हमें सही जगह पहले ही।

❑❑❑

जाड़े के फूलों को देखकर

वे सुन्दर घने फूल हँस पड़े
मुझे पास आते देखकर
इतने पास की चारों और वे रंगों से भरे हुए
हल्की हवा से हिलते–डोलते
जैसे बिना किसी आधार के हों
बस मेरे पास आना चाह रहे हों
वे इसी तरह से, मैं भी इसी तरह से
फर्क इतना कि वे रहेंगे मौजूद वहीं पर
मैं वापस लौट जाऊँगा
वो भी इतने सारे फूलों को छोड़कर
इनकी इतनी घनी कतार
इन्हें गिन भी नहीं सकता मैं
सभी एक ही दृष्टि से मेरी और मुख किए हुए
और उनके प्यार से द्रवित होता जा रहा हूँ।

❑❑❑

बच्चे

बच्चे लाइन में चलना नहीं चाहते
बच्चे नहीं जानते यह सुरक्षा का नियम है
बच्चे लाइनें तोड़ देते हैं
वे खेलना चाहते हैं मनपसंद बच्चों के साथ।
बच्चों के लिए कोई थकान नहीं,
न ही कोई दूरी है
दायरा है दूर-दूर तक देखने का
वे खेलते समय पाठ याद नहीं रखते
भूल जाते हैं पढ़ाई भी कुछ होती है
बच्चे मासूम उगते हुए अंकुर या छोटे से वृक्ष
अभी इतने कच्चे कि हवा से लथ-पथ
इनके चेहरे याद नहीं रहते
जैसे सभी अपने हों और एक जैसे
और उनकी खुशियाँ समा लेने के लिए
कितना छोटा पड़ जाता है यह भूखंड।

❑❑❑

एक संगीत समारोह में

शांति चारों ओर थी
और उसके संगीत के साथ परम शांति की ओर बढ़ते हम सभी
अगर शुरू के स्वरों से बाद में आने वाले शब्दों को
बाँध लें हम मन में,
तो संगीत को नृत्य के रूप में देखा जा सकता है यहाँ
यह संगीत अपनी लय में नृत्य करता हुआ
और उनकी आवाज, चेहरे और वाद्यों की धड़कन
जैसे हममें स्थित किसी सुप्त स्रोता को पुकारने लगी हो
जो अब लगभग पूरी तरह से जाग गया था
और सुर–ताल में स्थित प्रखर तेज का आलिंगन करने लगा था
हम स्थिर होकर भी महासमुद्र का गोता लगाते हुए,
कोई चुप नहीं यहाँ
सभी एक ही मंच को आलिंगनबद्ध किए हुए।

❑❑❑

कुछ बातें

एक कोयल कूँकती होगी सिर्फ अपने लिए
लेकिन उसकी आवाज सबको सुनाई देती है।
रास्तों में चलो तो
अपनी निगाहें पेड़ों पर कर लो
क्योंकि ये सारी धूल अपने मस्तक पर लगा लेते हैं।
पहचान बनाओ इतनी कि
वो हमेशा के लिए मौजूद रहे।
यूँ ही कभी किसी भूले को याद कर लो
कि पक्षी उड़ते हुए आकाश से निकल गए।
अनगिनत हाथों से छुए हुए सिक्के
तुम्हारे हाथों में
फिर घृणा किसी से क्यों
कि रात घोलती है अमृत
जागो या सोये रहो सबको मिलेगा
और मैं तलाशता रहा अंतहीन भूमि
यह ही मेरी सबसे बड़ी आस थी
मनुष्य नहीं हैं वहाँ फिर भी
धरती का तिनका भी
कितना अपना लगता है यहाँ
प्रेम से मेरी ओर उड़कर आता हुआ जैसे
और यह प्रेम मेरा कितना है
और तुम तक भी इसकी आवाज जाती हुई।

❑❑❑